International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-03-2022, Accepted: 15-04-2022, Published: 30-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 79-81

आंचलिकता और 'पंचलाइट'

डॉ. मीनाक्षी गुप्ता
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री अरबिंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
हिंदी साहित्य में आंचलिकता की शुरुआत फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं से होती है। आंचलिक साहित्य की पहचान के कई आधार हो सकते हैं, केवल गाँवों से कथावस्तु का जुड़ाव होना भर आंचलिकता की पहचान नहीं है। ऐसा इसलिए कि भारत मुख्यतः गांवों का देश है अतः इसे आंचलिक साहित्य का विभेदक पहचान नहीं माना जा सकता। रेणु की कहानियों का संसार अपनी संरचना एवं शिल्प में हिंदी कहानी परम्परा की एक नई पहचान लेकर उपस्थित होती है। इनकी कहानियाँ प्रेमचंद से जितनी भिन्न है उतनी ही उनके समकालीन कथाकारों से। रेणु की कहानियाँ गाँव एवं लोक की संस्कृति के वैभव को गहराई से छूती है। इनकी कहानियाँ किसी विचार या आदर्श को केंद्र में न रखते हुए सीधे हमें सामान्य जीवन में उतारती हैं। रेणु का ध्यान हमेशा से भारतीय ग्रामीण जीवन के बदलते हुए संश्लिष्ट यथार्थ की ओर उतना नहीं है था जितना उसके उत्सव धर्म स्वरूप की ओर । फणीश्वरनाथ रेणु ग्राम्यजीवन की आत्मीयता को अपने पूर्ण भाषायी परिवेशों के साथ उजागर करते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु की औपन्यासिक आंचलिक कला अत्यन्त उच्च कोटि की हैं। रेणु की कहानियां वास्तव में यथार्थ अनुभूति एवं संवेदनशीलता के उत्कृष्ट नमूने कहे जा सकते है जिनमें बिहार के अंचल विशेष का जीवन पूरी सच्चाई और गहराई के साथ उभारा गया है। 'पंचलाइट' एक पूर्णतः आंचलिक कथा नहीं है। परंतु आंचलिकता इस कहानी के केंद्र में है जो पात्रों की भाषा पात्रों के नाम तथा परिवेश और वातावरण से पता चलता है। अतः कहा जा सकता है कि आंचलिकता की दृष्टि से 'पंचलाइट' एक सफल कहानी है।

मूल शब्द: आंचलिकता, फणीश्वर नाथ रेणु, पंचलाइट, कहानियां, लोक भाषा, लोक गीत, गाँव, समाज, जाति, राजनीति

प्रस्तावना
हिंदी साहित्य में आंचलिकता की शुरुआत फणीश्वसाथ रेणु की रचनाओं से होती है। रेणु से पहले नागार्जुन ने अपने कथा साहित्य में आंचलिकता का अच्छा खासा चित्रण किया है, परंतु हिंदी साहित्य में आंचलिकता की अवधारणा को लाने का श्रेय रेणु को सर्वप्रथम जाता है। रेणु अपने उपन्यास 'मैला आँचल' में इस पद का पहली बार उल्लेख करते हैं, ''यह है 'मैला आँचल', एक आंचलिक उपन्यास। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है।... मैंने इसके एक हिस्से के एक गांव को पिछड़े गांवों का प्रतीक मानकर इस किताब का कथा क्षेत्र बनाया है।'' कथा साहित्य के इस नए परिवेश को आंचलिकता शब्द देने के बाद कई विद्वानों ने रेणु से इसपर सवाल पूछे, जिसका बेहद सादा और सरल जवाब देते हुए रेणु लिखते हैं, ''मैंने जो शब्द का इस्तेमाल किया, जैसी भाषा लिखी, क्या पता लोग उसे कुबूलकरेंगे अथवा नहीं, इसलिए मैंने 'मैला आँचल' को आंचलिक उपन्यास कह दिया। उसके बाद से लोगों ने आंचलिक उपन्यास का खाँचा बना दिया । जैसे कि आंचलिक उपन्यास को आदमी से तो कुछ लेना देना नहीं। समस्याओं से कुछ लेना – देना नहीं, बस अंचल एक चीज है और आंचलिक उपन्यास आँचल है। जो भी हो आंचलिक उपन्यास चाहे सफल हो या असफल, कम से कम आम जनता की एक बात तो सामने लाते हैं।''[2]
आंचलिक साहित्य की पहचान के कई आधार हो सकते हैं, केवल गाँवों से कथावस्तु का जुड़ाव होना भर आंचलिकता की पहचान नहीं है। ऐसा इसलिए कि भारत मुख्यतः गांवों का देश है, अतः इसे आंचलिक साहित्य का विभेदक पहचान नहीं माना जा सकता। हिंदी साहित्य में गाँव की जिंदगी का चित्रण बालकृष्ण भट्ट के साहित्य से आरंभ हो चुका था। नागार्जुन रामदरश मिश्र, शैलेश मटियानी, श्रीलाल शुक्ल, शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय और यहां तक कि विनोद कुमार शुक्ल भी अपने कथा साहित्य के लिए गाँव की पृष्ठभूमि का चयन करते हैं, परंतु उनके साहित्य को इसी आधार पर आंचलिक नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि ''आंचलिकता केवल स्थानीय रंगत नहीं है, जबकि 'रीजनल नॉवेल' में इसका विशेष रूप से इस्तेमाल किया है। वैसे तो सभी उपन्यासों में कथा क्षेत्र की स्थानीयता का कमोबेश अनिवार्य चित्रण होता है, किन्तु केवल स्थानीय रंगत के विशेष प्रयोग से वे आंचलिक नहीं बन सकते। आंचलिक उपन्यास अंचल के सम्पूर्ण वैशिष्ट्य का ऐसा संश्लिष्ट वस्तुन्मुख यथार्थ और समग्र वर्णन होता है जो सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक दूसरे शब्दों में जीवनगत विशेषताओं को विश्वसनीय बनाते हुए सामान्य की ओर अग्रसर होती है।... यही कारण है कि 'जुलूस' एक आंचलिक उपन्यास है जबकि स्थानीय रंगत के बावजूद 'चतुरी चमार' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' आंचलिक उपन्यास नहीं है।'' आंचलिकता के संदर्भ में यही बात हिंदी कहानी पर भी लागू होती है। जब किसी कहानी को आंचलिक कहा जाता है तो उसका अर्थ किसी अंचल विशेष से संबद्ध किसी कथावस्तु को इस तरह प्रस्तुत करना होता है कि वो अंचल अपनी संपूर्ण विशेषताओं सहित चित्रित हो जाये। अंचल विशेष को संपूर्ण रूप से उभारने के लिए आवश्यक है कि वहां की रीति–नीति, आचार–व्यवहार, वेशभूषा, बोलचाल आदि को इस ढंग से प्रस्तुत किया जाए कि वह रचना के अंग बन जाए।
आंचलिकता की पृष्ठभूमि की अगर बात करें तो हमारा ध्यान गांधी जी द्वारा 1935 के 'हिंदी साहित्य सम्मलेन' में हिंदी लेखकों को गांवों की तरफ जाना आवश्यक बताया, ताकि अधिक से अधिक लेखक नगरीय भावबोध से बाहर निकल कर ग्रामीण जन को, तथा वहां के वातावरण को जान और समझ सकें। फिर, 1940 में बनारसीदास चतुर्वेदी, शिवदान सिंह चौहान आदि द्वारा जो 'जनपदीय आंदोलन चलाया गया, यह भी उल्लेखनीय कार्य है। इन कारणों से हिंदी लेखक को

ग्राम जीवन की समृद्धि और अभाव ने अपनी तरफ आकृष्ट किया। साथ ही भुवनेश्वर मिश्र, प्रेमचंद, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि लेखक पहले से ही ग्राम केंद्रित कथा परम्परा का निर्वाह कर चुके थे। इन कारणों से फणीश्वरनाथ रेणु को एक ऐसा प्लेटफॉर्म मिला जिसपे वह आसानी से ग्राम जीवन की परंपरा व आंचलिकता का विकास कर पाएं। कहना ना होगा कि रेणु अपने अंचल के जीवन में अच्छी तरह रम कर उसे अपने कथा साहित्य में विविध रूप रंग से बांधते हैं। इस संदर्भ में डॉ. सुरेश सिन्हा का कथन उल्लेखनीय हैं, ''ग्रामीणों की कुटिलता एवं विशेषताएं, लोकगीत तथा लोकजीवन, परंपराएं, रूढ़ियाँ एवं परिवर्तनशीलता, नवोन्मेष की भावना, नया जीवन, पंचायते, नौटंकी, सड़कों की धूल, हवा, धूप, रोशनी आदि तमाम सारी बातें रेणु ने इतनी आत्मीयता से इनमें चित्रित की हैं कि वे स्वयं उनकी आत्मभोगी प्रतीत होती हैं। ग्राम्य जीवन में जो नवीन मूल्य आ रहे हैं, और प्रगतिशीलता के जो चिह्न छुपे पड़े हैं, उन्हें उभारने का रेणु ने विशेष रूप से प्रयत्न किया है।''[4]

रेणु की कहानियों का संसार अपनी संरचना एवं शिल्प में हिंदी कहानी परम्परा की एक नई पहचान लेकर उपस्थित होती है। इनकी कहानियाँ प्रेमचंद से जितनी भिन्न है उतनी ही उनके समकालीन कथाकारों से। रेणु की कहानियाँ गाँव एवं लोक की संस्कृति के वैभव को गहराई से छूती है। इनकी कहानियाँ किसी विचार या आदर्श को केंद्र में न रखते हुए सीधे हमें सामान्य जीवन में उतारती हैं। रेणु का ध्यान हमेशा से भारतीय ग्रामीण जीवन के बदलते हुए संश्लिष्ट यथार्थ की ओर उतना नहीं है था जितना उसके उत्सव धर्म स्वरूप की ओर। मधुरेश उनके कहानियों के संदर्भ में लिखते हैं कि, ''अपनी कहानियों में एक ओर रेणु आधुनिकीकरण की विडंबना के रूप में शहर की ओर पलायन करते ग्रामीण युवकों को अंकित करते हैं तो दूसरी ओर भारतीय ग्रामों की लोक कला एवं लोक संस्कृति को मिशनरी उत्साह और काव्यात्मक संवेदना के साथ पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं।''[5] फणीश्वरनाथ रेणु के ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, अच्छे आदमी आदि इन कहानी संग्रह का वैशिष्ट्य ग्राम संस्कृति के प्रति उनकी गहरी ललक के रूप में रेखांकित किया जा सकता है जो उनके समूचे रचनाकर्म की बुनियादी पहचान है।

फणीश्वरनाथ रेणु ने हिन्दी कहानी में सर्वथा एक नयी शैली का सूत्रपात किया, जिसे आंचलिक शैली के नाम से जाना जाता है। यदि आंचलिकता की परिभाषा को बड़ा किया जाए तो गाँव की घटनाएं भी इस दायरे में आ जाएंगी। किसी शुभ अवसर पर लोगों को भोज देने के समय बड़ी जातियों का छोटी जातियों के साथ खाने से इंकार करना, फसल कटाई–बुवाई के समय लोकगीत गाना, अखाड़ा होना, वाद–विवादों के निपटारे के लिए पंचायत बुलाना आदि को भी आंचलिकता का एक रूप कहा जा सकता है। अगर फणीश्वरनाथ रेणु को आंचलिक साहित्यकार के तौर पर रेखांकित किया जाता है तो सिर्फ इसमें ही उनका व्यक्तित्व नहीं समाता। उनके लेखन में मानवीय रसप्रियता झलकती है जिसमें ग्राम्य भोलापन है। उनके लेखन से झलकता है कि वह सुधार के पक्षधर थे लेकिन इसके लिए वह नारे नहीं लगाते सिर्फ गांव के लोगों के मीठे झूठों को पकड़ते हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु के कहानी संग्रह 'ठुमरी' की 'पंचलाइट' कहानी बेहद मजेदार है। विभिन्न जातियों और वर्णों में विभाजित बिहार के गांव के आपसी संघर्ष की भूमिका पर आश्रित इस कहानी में रेणु ने बड़ी ही सामान्य बात को मनोरम कथा के रूप में ढाला है। ग्रामांचल कहानीकार ने गांव की सामाजिक व्यवस्था को उजागर कर नई रोशनी की व्यवस्था में ग्रामीण परिवेश के साथ सभी स्त्री–पुरुष–बच्चों की कौतूहल की मानसिकता का चित्रण किया है। ''पिछले पन्द्रह दिनों से दण्ड– जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स ख़रीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में। गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग–अलग 'सभाचट्टी' है। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पेट्रोमेक्स हैं पेट्रोमेक्स जिसे गांववाले पंचलाइट कहते हैं।.... पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में ही तय किया दस रुपय जो बच गए हैं, इससे पूजा की सामग्री खरीद ली जाए – बिना नेम–टेम के कल–कब्जेवाली चीज का पुन्याह नहीं करना चाहिए। अंग्रेजबहादुर के राज में भी पुल बनाने से पहले बलि दी जाती थी।'' इस कहानी में श्रेष्ठ आत्मीयता की जिज्ञासा तथा पारस्परिक सौहार्द देखने को मिलता है। 'पेट्रोमैक्स' को लाना तथा उसके जलने की कला से कौतूहल की सृष्टि कर लेखक ने पाठक की जिज्ञासा को बांधे रखा है। गली–मोहल्ले, टोले भर में यही जिज्ञासा की चर्चा वातावरण को गहरी संवेदना से जोड़े रहती है। दण्ड–जुर्माने जैसी पंचायती कोष का सदुपयोग सार्वजनिक हित में करना गांव की कौटुम्बिक मानसिकता कहानी के उद्देश्य स्पष्ट करती है। आपसी मतभेद सभी लोग प्रकाश की कामना में जुट जाते हैं। आंचलिक परिवेश, स्थितियां खास मनोदशाएँ इस कहानी में स्पष्ट उजागर हुई हैं। छोटे–छोटे वाक्य की संरचना से कहानियां भाषाई कठिनाई नहीं है। वाक्य सूक्तिपरक बन गए हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु ग्राम्यजीवन की आत्मीयता को अपने पूर्ण भाषायी परिवेशों के साथ उजागर करते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु की औपन्यासिक आंचलिक कला अत्यन्त उच्च कोटि की हैं। फणीश्वरनाथ रेणु का संपूर्ण जीवन राजनीति से साहित्य और साहित्य से राजनीति की ओर एक शोधक यात्री की तरह यात्रा करते रहे हैं। इनकी इस यात्रा को अकारण या भटकावपूर्ण बिलकुल नहीं कहा जा सकता है बल्कि यह सामाजिक बदलाव के प्रति की गई कोशिश एवं तीव्र छटपटाहट को दिखाता है। यही कारण है कि फणीश्वरनाथ रेणु का संपूर्ण साहित्य राजनीति की मजबूत बुनियाद पर स्थित है। रेणु ने सामाजिक बदलाव को अपनी कहानी का मुख्य आधार बनाया और उस बदलाव के लिए जोखिम उठाने से भी पीछे नहीं हटे। यही उनके कथा साहित्य को औरों से बेहतर और अलग बनाती है।

फणीश्वरनाथ रेणु ग्रांमाचलों की हलचलों, ग्रामीणों की परिस्थितियों और उनकी मनस्थिति को सटीक ढंग से चित्रित करते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ग्रामीण पात्रों का चित्रण करने में इतना अधिक डूब जाते हैं कि पाठकों का उनके पात्र से एक अटूट रिश्ता सा बन जाता है। फणीश्वरनाथ रेणु ने ग्रामीण जीवन के लोकगीतों का बहुत ही सृजनात्मक एवं सजीव वर्णन किया है।

कहानी में टूटे समाज को जोड़ने को 'मोधन खोल दिया जायें' की घोषणा स्वर के जरिए कहानीकार ने समाज के नए स्वरूप का दिग्दर्शन दर्शन कराया है। रूढ़िवादी अवधारणाओं से पाठक को ऊपर उठाया है और सामाजिक सौमनस्य बढ़ाया है। लोकभाषा का सहज और जीवंत रूप कहानी को प्राणवान बनाता है। समाज में समरसता उत्पन्न कर कहानी के मूल बिंदु को यथार्थपरक बोध से संपृक्त कर दिया है। ग्रामीण आंचलिक परिवेश के साथ गांव की वास्तविक हलचलों

परिवर्तित स्थितियों, टोलों के टकराव, परस्पर तनाव, जातीय विडंबनाओं के मध्य दुखी मानवीय संबंधों का लेखा–जोखा इस कहानी के माध्यम से रेणु ने उजागर किया है।

कहानी में कुछ समस्याओं का भी संकेत है। वहां जाति–भेद, वर्ग–भेद है। गाँव में आठ टोलियां है, आठ पंचायतें है। सबमें परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य व स्पर्धा का भाव है। साथ ही कहानी का परिवेश इसे एक आंचलिक कहानी के रूप में ढलता है सरदार की ड्योढ़ी, कीर्तन– मंडली, टोली के लोगों की भीड़, गपशप, चौकी पर रखी पूजा की सामग्री आदि एक ग्राम विशेष की झलकियाँ प्रस्तुत करता है।

इस कहानी में बिहार प्रांत का गांव अपनी समस्त सामाजिक विशिष्टताओं के साथ उजागर हो उठा है। जो वहाँ के लोकभाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है – ''भाई रै गाय लूं ? तो दुहै कौन।'''

गांव में सभी जातियों की अपनी–अपनी 'सभाचट्टी' एक टोले का दूसरे टोले के प्रति अलगाव और स्पर्द्धा की भावना, कल–पुर्जे की चीजों के प्रति अपरिचय, गाँव टोलों की पंचायतें, सिनेमा के गीतों के प्रति अपनी प्रतिक्रियाएं, जाति वर्ग के इज्जत के सवाल आदि अनेक प्रसंग हैं जो इस कहानी के अत्यंत छोटे से कैनवास पर भी अपने छोटे बड़े डिटेल के साथ मनोहारी रूप में उभर उठे हैं। सिनेमा के गीत के कारण हुक्का–पानी बंद होना। पंचलाइट को जलाकर बिरादरी की इज्जत बचाने के लिए 'सात खून मार्फ' होना। 'तेरे लिए मैनें लाखों के बोल सहे' तेरे लिए अर्थात् पंचलैट के लिए, मुनरी के लिए, गोधन के लिए, पंचायत के लिए, टोले की इज्जत के लिए।

एक आंचलिक कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है एक अंचल विशेष की लोकभाषा का प्रयोग, जिसमें यह कहानी पूरी तरह से सफल भी हुई है। इस कहानी में अनेक जगह लोकभाषा के इस रूप को देखा जा सकता है। जैसे पेट्रोमैक्स के लिए पंचलाइट, पंचायत के लिए सभाचट्टी, सिनेमा के लिए सलीमा। साथ ही साथ कीर्तनिया, मुलगैन, भगतिया जैसे स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया गया हैं। इसके अतिरिक्त पात्रों के नाम भी ग्रामीण परिवेश को दर्शाते हैं गोधन, मुनरी, गुलरी काकी आदि ।

निष्कर्ष

रेणु की कहानियां वास्तव में यथार्थ अनुभूति एवं संवेदनशीलता के उत्कृष्ट नमूने कहे जा सकते है, जिनमें बिहार के अंचल विशेष का जीवन पूरी सच्चाई और गहराई के साथ उभारा गया है। 'पंचलाइट' एक पूर्णतः आंचलिक कथा नहीं है। परंतु आंचलिकता इस कहानी के केंद्र में है जो पात्रों की भाषा, पात्रों के नाम तथा परिवेश और वातावरण से पता चलता है। तभी नन्ददुलारे वाजपेयी उनकी प्रतिभा से चकित होकर लिखते हैं कि ''इतना प्रभावशाली लेखक बहुत दिनों बाद पैदा हुआ है।'' अतः कहा जा सकता है कि आंचलिकता की दृष्टि से 'पंचलाइट' एक सफल कहानी है।

संदर्भ सुची

1. मैला आँचल, भूमिका फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ संख्या–1
2. मैला आँचल का महत्त्व सं. मधुरेश पृष्ठ 79
3. आंचलिकता, यथार्थवाद और फणीश्वरनाथ रेणु – डॉ सुवास कुमार, पृष्ठ–16–17
4. नयी कहानी की मूल संवेदना डॉ सुरेश सिन्हा, पृष्ठ–62
5. हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश, पृष्ठ–89
6. पंचलाइट – फणीश्वरनाथ रेणु
7. हिंदी साहित्य बीसवीं शताब्दी नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ठ – 55